E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

1857 की क्रांति में जनपद जालौन (ताई बाई का योगदान)

रचना पाल

शोधार्थी, इतिहास अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.14587487

सारांश :

अंग्रेजों के खिलाफ 1857 में उठी बगावत की चिंगारी में वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर अंग्रेजों को धूल चटाने वाली जालौन जिले की पहली महिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और अंतिम शासिका महारानी ताईबाई। 1857 की क्रांति को भला कौन भूल सकता है? इस आजादी की जंग में न जाने हमारे कितने क्रांतिवीरों और वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की आहुति दी है। ऐसी ही एक वीरांगना इतिहास के पन्नों में दर्ज है, जिसे महारानी ताईबाई के नाम से जाना जाता है। महारानी ताईबाई जालौन की प्रथम महिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और जालौन राज्य की अंतिम शासिका के तौर पर जानी जाती हैं।

महारानी ताईबाई का नाता वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई से रहा है और वह रानी लक्ष्मीबाई के साथ 1857 की क्रांति में अंग्रेजों के विरोध में कूद पड़ी थीं। अंग्रेजों को उन्होंने खदेड़ दिया था, जिसके बाद 1858 में पूरा जालौन जिला महारानी ताईबाई के अधिकार में आ गया। जालौन नगर के मध्य में स्थित प्राचीन तहसील भवन मराठा राजवंश की शासिका ताईबाई का महल है, जहां वह निवास करती थीं। प्राचीन तहसील भवन ताईबाई की शौर्य गाथा की याद दिलाता है और स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान की निशानी है।

ताईबाई ने तात्या टोपे के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी थी। कानपुर की लड़ाई में तात्या टोपे के पराजित होकर लौट आने के बाद भी ताईबाई ने हिम्मत नहीं हारी थी। उन्होंने आभूषण बेचकर सेना तैयार की और नई सेना के द्वारा तात्या टोपे के साथ चरखारी पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। इसके बाद ताईबाई ने जालौन, कनार, कालपी, आटा, उरई, महोम्मदाबाद, कोटरा, और कोंच इलाके में अंग्रेजों का कोई नामोनिशान नहीं रहने दिया।

अंग्रेजों का नरसंहार रोकने के लिए उन्होंने आत्मसमपर्ण महारानी ताईबाई का शासन अंग्रेजों को रास नहीं आ रहा था। तभी अंग्रेजों ने नई कूटनीति का इस्तेमाल करते हुए उनके सहयोगियों को मिटाना शुरू कर दिया। इसके लिए उन्होंने युद्ध का नहीं बल्कि नरसंहार का सहारा लिया। तब अंग्रेजों ने एक दर्जन से अधिक क्रान्तिकारियों को खुलेआम पेड़ से लटका दिया गया और इस तरह से अंग्रेजों का नरसंहार जारी रहा। फिर अंत में लाईबाई ने नरसंहार रोकने के लिए मई 1858 को अपने पति और पुत्र के साथ जाकर आत्मसमर्पण कर दिया।

अंग्रेजों ने उनकी समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली। अंग्रेजों ने राजद्रोह और विद्रोह का आरोप लगाकर उन्हें और उनके सहयोगियों को आजीवन कारावास की सजा सुना दी।

जिले में मराठा शासन से जुड़े कई स्थल हैं। हालांकि जालौन उनमें मुख्य इसलिए है चूंकि यहीं पर नाना साहब रहे और बाद में ताईबाई का शासन रहा। नाना साहब गढ़ी पर बने किले में रहते थे जबकि ताई बाई रानी महल में। 1857 से प्रथम स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजों का डटकर रानी ताई बाई ने सामना किया था। तात्या टोपे के साथ मिलकर उन्होंने अंग्रेजों को पस्त किया। इसके बाद भी कहीं से मदद न मिलने के बाद भी वह अंग्रेजों का डटकर सामना करती रहीं। हालांकि बाद में हुए घटनाक्रम के कारण उन्होंने अपनी प्रजा की रक्षा हेतु आत्मसमर्पण कर दिया था। लाई बाई के कौशल का ही परिणाम था कि अंग्रेजों ने बाद में उनकी विरासत के रूप में रहे किले को तुड़वा दिया था। हालांकि उनका महल आजादी के बाद भी सुरक्षित रहा। लेकिन अंग्रेजी शासन के बाद सत्ता में आई सरकारों ने भी उनके महल को संरक्षित करने की क्रांति दिशा में कोई कदम नहीं उठाया।

गांधीवादी विचारक राधेश्याम योगी का कहना है कि ऐसी ऐतिहासिक विरासत को संरक्षित करने की जरूरत है। जो देशप्रेम के लिए लोगों को प्रेरित करती है। जिससे लोग इसके बारे में जानने को उत्सुक रहते हैं।

सन् 1857 की क्रान्ति में सभी अपनी क्षमता से अधिक आवृत्ति देने की तत्परता दिखा रहे थे। उत्तर प्रदेश का जनपद जालौन भी किसी दृष्टि से इस संघर्ष में पीछे नहीं रहा। छोटे-छोटे संघर्ष के अतिरिक्त सन् 1857 में जनपद जालौन क्रान्तिकारियों की कर्मभूमि बन कर उभरा, यहां तक कि क्रान्ति की समस्त गतिविधियां बुन्देलखण्ड में अलग-अलग संचालित न होकर एकजुट रूप में कालपी से संचालित होने लगीं। नाना साहब, तात्या तोपे, रानी लक्ष्मीबाई, कुंवर साहब आदि की रणनीति यहीं पर बनती और क्रियान्वित होने लगती। इन सबसे अलग जनपद जालौन का नाम इस बिन्दु पर आकर ज्यादा आभासित प्रतीत होता है कि इन सभी प्रसिद्ध नामों से बहुत पूर्व जनपद की पहली महिला क्रान्तिकारी ताई बाई ने इस आन्दोलन में सक्रियता दिखा कर क्षेत्र के क्रान्तिकारियों के मध्य एक अलख जगा दी थी। यह जनपद

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

जालौन का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि इस क्षेत्र के ऐतिहासिक महत्व की ओर इतिहासकारों की ओर से ध्यान नहीं दिया गया।

जनपद जालौन के इतिहास में ताई बाई की स्मृति को मिटाने का कार्य तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों द्वारा ही शुरू कर दिया गया था। ताई बाई के द्वारा लगातार सात माह तक क्रान्तिकारी सरकार के रूप में कार्य किया गया। यह दुस्साहस अंग्रेजों को नागवार गुजरा, इसी कारण से ताई बाई से सम्बन्धित समस्त दस्तावेज, वस्तुओं यहां तक कि जालौन स्थित उनके किले को सन् 1880 में जमींदोज करवा दिया। अंग्रेजी सरकार की इस कायरतापूर्ण कार्यवाही के बाद भी इस वीर महिला की वीरता का वर्णन करते हुए तत्कालीन झांसी डिवीजन के एक अंग्रेज अधिकारी जे0 डब्ल्यू0 पिंकने ने लिखा भी था कि वर्ष 1858 के प्रारम्भ होते होते दबोह और कछवाघार के कुछ भागों को छोड़ कर पूरा जालौन जिला ताई बाई के अधिकार में आ गया था।

सन् 1838 में जालौन पर अंग्रेजों का अस्थाई अधिकार हो गया था। जालौन के राजा की मृत्यु पश्चात यहां उत्तराधिकार की समस्या सामने आई। राजा की पत्नी ने एक बालक गोद लेकर राज्य करने का विचार किया मगर उसकी अनुभवहीनता और आपसी झगड़ों में यहां की स्थिति बिगड़ गई। तब स्वर्गीय राजा बालाराव की पत्नी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों से जालौन की रियासत को संभालने का आग्रह किया। तत्पश्चात सन् 1838 में यहां प्रशासक नियुक्त कर दिया गया। इसी दौरान सन् 1840 में गोद लिए बालक गोविन्दराव की मृत्यु हो गई। इस बार अंग्रेजों ने रानी को पुनः किसी को गोद लेने की अनुमति नहीं दी और जालौन रियासत को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। इसी वर्ष अंग्रेजों ने जालौन को जिले के रूप में मान्यता प्रदान की।

जनपद जालौन की पहली महिला क्रान्तिकारी ताई बाई जालौन रियासत के स्वर्गीय राजा बाबारव की बहिन थीं। ताई बाई का विवाह सागर के नारायण राव से हुआ था परन्तु विवाहोपरान्त ताई बाई अपने पति सहित जालौन के किले में ही निवास करने लगीं। राजा गंगाधर राव की मृत्यु पश्चात उनकी पत्नी रानी लक्ष्मीबाई के द्वारा शासन का संचालन उचित रूप से नहीं हो पा रहा था. इधर परिस्थितियों के विषम होने के कारण जालौन को अंग्रेजों ने अपने अधिकार में भी ले लिया था। ताई बाई अपने पूर्वजों का ऐसा अपमान नहीं देख पा रहीं थीं। अंग्रेजों से बदला लेने के लिए उनके भीतर स्वाधीनता क्रान्ति का अंकुर फूटने लगा इसी कारण उन्होंने गुपचुप तरीके से अपनी योजना को क्रियान्वित करने का विचार बनाया।

कानपुर में क्रान्ति की शुरूआत होने की सूचना 6 जून 1857 को उरई पहुंची। इसके पश्चात यहां भी क्रान्तिकारियों ने कार्यवाही प्रारम्भ कर दी। क्रान्ति का आरम्भ होते ही जालौन के डिप्टी कमिश्नर कैप्टन ब्राउन ने भागने में ही अपनी भलाई समझी। कैप्टन ने भागते समय गुरसराय के राजा केशवदास को पत्र लिख कर जालौन में शांति स्थापित करने में सरकारी अधिकारियों की सहायता करने को कहा। कैप्टन के पत्र की भाषा में फेरबदल करके उसे सरकार चलाने के अधिकार-पत्र के रूप में परिवर्तित कर लिया। केशवदास ने अपने दोनों पुत्रों के साथ जालौन आकर अन्य सरकारी अधिकारियों को भगा कर किले पर अधिकार कर लिया। केशवदास के इस कृत्य को ताई बाई आदि ने क्रान्तिकारियों का सहयोग समझकर धन-बल से उसकी सहायता की। इधर ताई बाई अन्य क्रान्तिकारी गतिविधियों का संचालन करने लगी और राजा केशवदास पर विश्वास कर बैठीं।

केशवदास की कुछ गतिविधियों से लगता कि वे क्रान्तिकारियों के पक्ष में हैं तो कभी लगता कि वे अंग्रेजों के पक्ष में हैं। इस बारे में एक घटना को प्रमुखता से देखा जाता है। जालौन में क्रान्ति के पश्चात दो अंग्रेजी डिप्टी कलेक्टर प्रशन्हा और ग्रिफिथ को बन्दी बना लिया गया था। जब तक कानुपर में नाना साहब, तात्या तोपे क्रान्तिकारी के रूप में और जालौन में ताई बाई की सक्रियता रही तब तक केशवदास ने इन अंग्रेज अधिकारियों को बन्दी बनाये रखा। अंग्रेज नाराज न हो जायें इस कारण से केशवदास ने उन्हें मारा भी नहीं और फिर कानपुर में क्रान्तिकारियों की पराजय के साथ ही केशवदास ने दोनों अंग्रेज अधिकारियों को परिवार सहित सकुशल कानपुर पहुंचा दिया।

इस घटना के बाद से ताई बाई को विश्वास हो गया कि केशवदास अंग्रेजों के लिए कुछ भी कर सकता है। इधर पराजित क्रान्तिकारी कानपुर से भागकर कालपी आ गये। तात्या तोपे भी अक्टूबर 1857 को ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों के साथ जालौन आ पहुंचे। ताई बाई ने तात्या तोपे के साथ मिलकर केशवदास को वापस गुरसराय जाने पर विवश कर दिया। इस घटना के बाद तात्या ने ताई बाई के पांच वर्षीय पुत्र गोविन्द राव को जालौन की गद्दी पर बिठा कर ताई बाई को संरक्षिका घोषित कर दिया। इस कार्यवाही से जालौन में क्रान्तिकारियों की सरकार का गठन हो गया और पेशवाई राज्य की स्थापना हुई। ताई बाई ने इसके बाद भी अपनी गतिविधियों को विराम नहीं लगने दिया। क्रान्तिकारी गतिविधियों के आगे के संचालन हेतु ताई बाई ने तात्या तोपे को तीन लाख रुपये की सहायता प्रदान की।

क्रान्तिकारियों की सरकार बन चुकी थी और ताई बाई ने सफल संचालन के लिए प्रधानमंत्री तथा अन्य अधिकारियों की नियुक्ति की ताई बाई ने अदभुत क्षमता से अत्यल्प समय में एक बड़ी सेना का गठन करके उसे तात्या तोपे के साथ कानपुर पर अधिकार करने के लिए भेज दिया। कई हमलों में विजय भी प्राप्त हुई परन्तु पूर्ण अधिकार प्राप्त न हो सका। अन्ततः दिसम्बर में एक युद्ध में इस सेना की भयानक पराजय हुई। यह सेना हताश मन से वापस लौट आई।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

ताई बाई यह भली-भांति समझती थी कि यदि इस समय हिम्मत हारी तो क्रान्तिकारियाँ में जोश पैदा करना मुश्किल हो जायेगा। इस कारण से ताई बाई ने अपने व्यक्तिगत जेवरों और कीमती वस्तुओं को बेचकर प्राप्त धन से सेना का पुनः गठन किया।

जालौन में क्रान्तिकारियों का स्वतन्त्र राज्य पहले से ही स्थापित था, ताई बाई ने सहयोग के लिए चरखारी नरेश से सहायता मांगी। अंग्रेजों के हितैषी चरखारी नरेश ने सहायता देने से मना किया तो ताई बाई ने तात्या तोपे के नेतृत्व में अपनी सेना के द्वारा चरखारी पर विजय प्राप्त की। अपनी समूची सेना के खर्ची, युद्ध खर्ची, वेतन आदि का भार ताई बाई स्वयं ही उठाती रहीं। अपनी सूझबूझ और कुशल नेतृत्व क्षमता के कारण ताई बाई ने सम्पूर्ण जनपद में अंग्रेजों का नामोनिशान भी न रहने दिया।

ताई बाई की बढ़ती शक्ति से अंग्रेज भी परेशान थे। मई 1858 में कोंच के युद्ध में क्रान्तिकारियों की पराजय से अंग्रेजों को जनपद में पुनः घुसने का मौका मिला। कोंच में विध्वंस करने के बाद अंग्रेजों ने सीधे कालपी की ओर रुख नहीं किया और न ही सीधे तौर पर ताई बाई से युद्ध किया। अंग्रेजों ने नई कूटनीति का इस्तेमाल करते हुए ताई बाई के सहयोगियों को मिटाना शुरू कर दिया। इसके लिए उन्होंने युद्ध का नहीं वरन् नरसंहार का सहारा लिया। सबसे पहले हरदोई के जमींदार अंग्रेजी सेना के कोपभाजन बने। भयंकर लूटपाट और नरसंहार किया, एक दर्जन से अधिक क्रान्तिकारियों को खुलेआम पेड़ से लटका कर फांसी की सजा दे दी गई। अंग्रेजों का नरसंहार जारी रहा. अब वे ताई बाई से सीधे न टकराकर जनता को निशाना बना रहे थे। ताई बाई ने नरसंहार को रोकने का उपाय भी किया किन्तु अंग्रेज सीधे-सीधे युद्ध भी नहीं कर रहे थे इस कारण ताई बाई के समक्ष दिक्कत भी आ रही थी।

अन्ततः ताई बाई ने नरसंहार रोकने के लिए मई 1858 को अपने पति और पुत्र के साथ आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने लाई बाई की जालौन की समस्त सम्पत्ति जब्त कर ली। राजद्रोह और विद्रोह का आरोप लगाकर उन्हें तथा उनके सहयोगियों को आजीवन कारावास की सजा सुना दी। ताई बाई की लोकप्रियता और शक्ति से घबराकर अंग्रेजों ने उन्हें बंदी जीवन बिताने के लिए जालौन से बहुत दूर मुंगेर- बिहार भेज दिया गया। यहीं पर कैदी जीवन बिताते हुए उनकी मृत्यु सन् 1870 में हो गई लाई बाई की मृत्यु के बाद भी अंग्रेज उनकी लोकप्रियता और शक्ति से घबराते रहे। इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि उनको मृत्यु के बाद उनके कैदी बेटे को पढ़ने के लिए तो इलाहाबाद भेज दिया गया किन्तु उनके बंदी पति को जालौन में रहने की आज्ञा नहीं दी गई।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

वर्तमान में ताई बाई को अंग्रेजी कोप के कारण कोई जानता भी नहीं है। एक छोटे से स्थान पर उन्होंने अपनी कार्यक्षमता और कुशल सैन्य संचालन से अक्टूबर 57 से मई 58 तक स्वतन्त्र सरकार की स्थापना कर उसका संचालन किया। जनपद जालौन की इस क्रान्तिकारी महिला को लोग इस कारण से भी नहीं पहचानते हैं कि अंग्रेजों ने यथासम्भव जालौन से ताई बाई से सम्बन्धित सभी वस्तुओं, दस्तावेजों आदि को समूल नष्ट कर दिया था। इसके बाद भी उनकी छवि लोकप्रियता भले ही रानी लक्ष्मीबाई जैसी न रही हो किन्तु जनपद जालौन के निवासियों के मन मष्तिष्क में ताई बाई की छवि आज भी बसी हुई है। अंग्रेजों द्वारा लिखे गये क्रान्तिकारियों के भ्रामक इतिहास को पुनः लिखने और सामने लाने की आवश्यकता है. कुछ इसी तरह की पहल की आवश्यकता ताई बाई के गौरवशाली इतिहास को सामने लाने की है। जनपद जालौन की पहली महिला क्रान्तिकारी ताई बाई को इन्हीं समवेत प्रयासों के माध्यम से ही देशवासियों के सामने लाया जा सकता है, तभी हम सभी अन्य वीर-वीरांगनाओं की तरह ही ताई बाई को भी याद रख सकेंगे।

सन्दर्भ सूची :

1. फॉरेस्ट, जी. डब्लू. द इण्डियन म्यूटिनी 1857-58 झाँसी, कालपी, ग्वालियर, रीप्रिंट, 2003, दिल्ली
2. लुआई सी ई. कन्टेम्पोरेरी न्यूज पेपर एकाउन्ट ऑफ इवेन्टस ड्यूरिंग द म्यूटिनी इन सेन्ट्रल इण्डिया 1857-59.
3. रिजवी, एस. ए. ए., फ्रीडम मूवमेंट इन उत्तरप्रदेश भाग - 3, 1956-61.
4. डाडवेल. एच. एच., द कैंब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया Vol vi कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1929.
5. ड्रेक लोकमेन डी. एल.. जालौन.. गजट इलाहाबाद 1909.
6. मजूमदार, आर. सी. .. भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड III कलकत्ता 1983.
7. सिंह बलवंत,.. उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर जालौन रामपुर 1989.
8. काये & मालेसन, हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी ऑफ 1857-58 जिल्द 3 लौंगमेन ग्रीन एण्ड कम्पनी 1898 लंदन
9. श्रीवास्तव, के. एल., दि रिवोल्ट ऑफ 1857 इन इंडिया- मालवा दिल्ली, 1966.